



जनसंख्या एवं हमारा पर्यावरण

बढ़ती जनसंख्या, घटती सुविधाएँ

एक गाँव था, जगतपुर। गाँव सुख-सुविधाओं से युक्त था। लोगों के पास खेती करने हेतु पर्याप्त भूमि थी। सभी को चिकित्सा, शिक्षा, आवास, वस्त्र एवं यातायात की सुविधाएँ आसानी से उपलब्ध थीं। धीरे-धीरे गाँव की जनसंख्या बढ़ने से लोगों की आवश्यकताएँ भी बढ़ीं। खेती हेतु भूमि तथा अन्य सुख-सुविधाएँ, प्रयोग की जाने वाली वस्तुएँ बढ़ी हुई जनसंख्या के अनुपात में कम पड़ने लगीं। दोनों के अनुपात में असंतुलन पैदा हो गया।



बढ़ती जनसंख्या

जनसंख्या वृद्धि का अर्थ केवल

लोगों की संख्या बढ़ने से नहीं है। किसी क्षेत्र विशेष की जनसंख्या वृद्धि का आकलन हम तभी कर सकते हैं, जब सामाजिक एवं आर्थिक सुविधाएँ होने के बावजूद भी हम अपना जीवन-यापन ठीक ढंग से नहीं कर पाते हैं। उदाहरण के लिए जब हमारे संसाधन जैसे— भूमि, जल तथा खाद्य पदार्थ आदि वहाँ रहने वाले व्यक्तियों को कम पड़ने लगते हैं, तो हम कह सकते हैं कि वहाँ की जनसंख्या में वृद्धि हुई है।

जनसंख्या वृद्धि की समस्या केवल जगतपुर गाँव की ही नहीं है। धीरे-धीरे पूरे देश में जनसंख्या वृद्धि की यही स्थिति होती जा रही है। यदि जगतपुर गाँव जैसे ही हमारे देश की जनसंख्या बढ़ती रही तो आज से 10-15 वर्ष बाद हमारी स्थिति क्या होगी? आपको यह जानकर आश्चर्य होगा कि **विश्व में जनसंख्या के आधार पर चीन के बाद हमारा देश दूसरे स्थान पर है।**

जनसंख्या वृद्धि का दुष्प्रभाव

पेड़-पौधे, जीव-जन्तु एवं मानव के बीच एक प्राकृतिक संतुलन रहता है। प्रकृति का यह नियम है कि वनस्पति एवं प्राणी पर्यावरण के अनुसार अपने को समायोजित कर लेते हैं। यदि पर्यावरण में जरा सा भी परिवर्तन होता है तो उसका प्रभाव पेड़-पौधे, जीव-जन्तु एवं मानव सभी पर पड़ता है।

बढ़ती हुई आबादी से पर्यावरण का अस्तित्व खतरे में पड़ता जा रहा है। पर्यावरण पर अनवरत रूप

से दबाव बढ़ता जा रहा है। जनसंख्या एवं मानव द्वारा उपभोग की जाने वाली वस्तुओं में आनुपातिक असंतुलन पैदा हो गया है।

इसी परिप्रेक्ष्य में प्रसिद्ध जनसंख्या शास्त्री माल्थस के विचार सत्य सिद्ध हो रहे हैं। उनका कथन है कि खाद्य सामग्री में वृद्धि सदैव अंकगणितीय क्रम जैसे 1, 2, 3, 4,.....में होती है तथा जनसंख्या वृद्धि ज्यामितीय क्रम जैसे 2, 4, 8, 16..... में बढ़ती है।

जनसंख्या वृद्धि का प्रभाव हमारे रहन-सहन, जीवन-शैली पर भी पड़ता है। नीचे दिए गए चित्र को ध्यान से देखें एवं तुलना करें-



दोनों चित्रों में किस परिवार का रहन-सहन अच्छा है तथा कौन खुशहाल दिखाई दे रहा है? चित्र देखकर अपने विचारों को तुलनात्मक रूप में बिन्दुवार लिखिए-

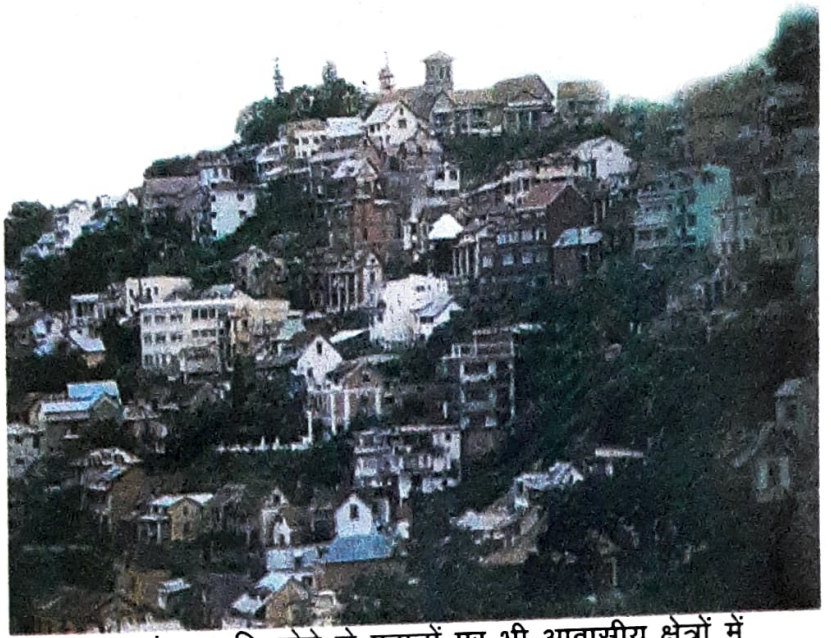
•

जनसंख्या वृद्धि से होने वाली समस्याएँ निम्नलिखित हैं-

- खाद्यान्न की समस्या
- आवास की समस्या
- चिकित्सा सुविधाओं में कमी
- यातायात में असुविधा
- पेयजल की समस्या
- जीवन की गुणवत्ता में कमी
- स्वच्छता की समस्या
- रोजगार की समस्या
- प्रदूषण की समस्या

प्रत्येक व्यक्ति के जीवनयापन के लिए भोजन, वस्त्र, एवं मकान मूलभूत आवश्यकताएँ होती हैं। भूमि का क्षेत्र सीमित है। भूमि ही सभी आवश्यकताओं की पूर्ति का आधार होती है। **जनसंख्या वृद्धि से कृषि योग्य भूमि का अन्य क्षेत्रों में उपयोग हो रहा है।** जैसे - एक परिवार को लें, परिवार में सदस्यों की संख्या बढ़ने से खेत-खलिहान, घर, मकान आदि सम्पत्तियों का बँटवारा होता है। सम्पत्तियाँ छोटे-छोटे

टुकड़ों में बँट जाती हैं। जिस सम्पत्ति में पहले चार सदस्यों का भरण-पोषण होता था अब उतनी ही सम्पत्ति में दस या बारह सदस्यों का भरण पोषण होता है। सोचें ! क्या इस स्थिति में सभी लोग बेहतर जीवन जी सकते हैं।



जनसंख्या वृद्धि होने से पहाड़ों पर भी आवासीय क्षेत्रों में वृद्धि हो रही है।

बढ़ती हुई जनसंख्या के बेहतर जीवन स्तर के लिये खेत-खलिहान का क्षेत्र बढ़ाना होगा। आवास का क्षेत्र बढ़ाना होगा। इन सभी के लिये भूमि की आवश्यकता होगी। इसके लिए लोग बाग-बगीचों, तालाब-नहर, खेत-खलिहान योग्य भूमि का उपयोग करेंगे। इससे आवास व खाद्यान्न समस्या हल हो जाएगी, लेकिन अन्य समस्याएँ बढ़ जाएँगी। बागों के हरे-भरे पेड़ों के कटने, तालाबों के पटने आदि से पर्यावरण सम्बन्धी कौन-कौन सी गम्भीर समस्याएँ उत्पन्न होंगी लिखिए—

- वायु प्रदूषण
- जलवायु परिवर्तन
-
-
-

जनसंख्या वृद्धि से रोजगार के अवसर भी कम हो रहे हैं। कुशल और शिक्षित लोगों को भी रोजगार प्राप्त करने में कठिनाई होती है। ऐसा क्यों है? यदि विचार करें तो ज्ञात होता है कि रोजगार के अवसर सीमित हैं परन्तु बेरोजगारी बढ़ने के कारण युवाओं में हताशा और आपराधिक प्रवृत्तियाँ बढ़ रही हैं।

इसी प्रकार आपने बसों या ट्रेनों में देखा होगा कि लोगों को बैठने हेतु जगह नहीं मिलती है। लोग ट्रेन एवं बस की छतों पर बैठकर यात्रा करते हैं। ऐसा नहीं है कि ट्रेन, बस या यातायात के वाहनों की संख्या में वृद्धि नहीं हुई है, परन्तु जनसंख्या वृद्धि से समस्याएँ बढ़ रही हैं। स्वास्थ्य केन्द्रों पर भी भीड़ की यही स्थिति है। आपने ध्यान दिया होगा कि राशन की दुकानों, टिकट-घर पर लम्बी-लम्बी कतारें दिखाई देती हैं, यह जनसंख्या वृद्धि का ही परिणाम है। सामाजिक सुविधाओं के अन्तर्गत हमें उद्यानों, सड़कों, नलकूपों, स्कूलों एवं हैण्डपम्प आदि की सुविधाएँ प्राप्त हैं। इन जगहों पर प्रायः इतनी भीड़-भाड़ रहती है कि सभी लोग इनका सही उपयोग नहीं कर पाते हैं।

महानगरों में बढ़ती जनसंख्या ने मकानों की कीमतों में वृद्धि कर दी है जिसके कारण गरीब लोग उनमें रहने में असमर्थ होते हैं। भारत जैसे विकासशील देश में ऐसे लोगों की अधिकता है जो गाँवों से रोजी-रोटी की तलाश में बड़े नगरों में आते हैं। इन्हें नगर क्षेत्र से अलग प्रायः जल-जमाव वाले क्षेत्रों में झुग्गी-झोपड़ी बनाकर रहना पड़ता है। इससे बड़े शहरों में मलिन बस्तियों की वृद्धि हो रही है। मलिन बस्तियों में पेयजल, प्रकाश, रास्ते एवं सड़कों तथा शौचालयों आदि नागरिक सुविधाओं का अभाव होता है जबकि लोगों की संख्या



बढ़ती जा रही है। ऐसी दशा में विभिन्न प्रकार की बीमारियों का प्रकोप सदैव बना रहता है।

आप अपने बुजुर्गों से पता करें कि उद्यान, स्कूल, सड़क आदि नागरिक सुविधाओं में भीड़-भाड़ की स्थिति 10 वर्ष पूर्व क्या थी ? इस समय की स्थिति आप देख ही रहे हैं। सोचिए, कि अगले 10 वर्ष बाद क्या स्थिति होगी ?

अतः जनसंख्या वृद्धि के कारण प्रकृति और मानव-जीवन में जो तालमेल बना हुआ था वह दिन प्रतिदिन बिगड़ता जा रहा है। पर्यावरण के प्रदूषित होने से मानव-जीवन को विभिन्न खतरों जैसे वायु-प्रदूषण, जल प्रदूषण एवं ध्वनि प्रदूषण आदि का सामना करना पड़ता है।



यदि जनसंख्या वृद्धि को नियंत्रित कर लिया जाए एवं वनों के कटाव को रोक दिया जाए तो वायु, जल आदि का प्रदूषण नियंत्रित किया जा सकता है। इस नियंत्रण से ही हमारा पर्यावरण, जो स्वस्थ जीवन के लिये आवश्यक है, अनुकूल बन पाएगा।

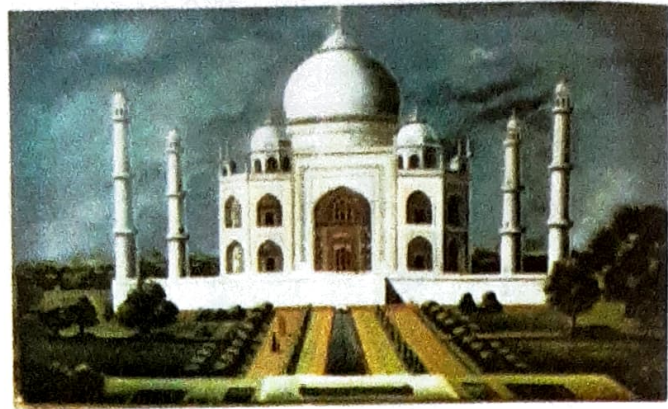
जनसंख्या वृद्धि का पर्यावरण पर प्रभाव

जनसंख्या बढ़ने से इसका सीधा प्रभाव पर्यावरण पर पड़ रहा है। हम अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए उपलब्ध विभिन्न संसाधनों का दोहन कर रहे हैं, जिसके कारण पर्यावरण असंतुलन बढ़ रहा है। हम अपनी भोजन तथा आवास जैसी मूल आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए वनों का विनाश करते जा रहे हैं, जो कि हमारे जीवन के लिए अत्यन्त आवश्यक हैं। हम लगातार श्वसन क्रिया तथा अपने अन्य कार्यों द्वारा वातावरण में अनेक हानिकारक गैसों को मुक्त करते हैं। इनमें से कुछ गैसों जैसे— कार्बन डाइऑक्साइड, मीथेन तथा जलवाष्प सूर्य से आने वाले विकिरण को अवशोषित कर लेती है तथा उन्हें वापस नहीं जाने देती हैं जिसके परिणामस्वरूप पृथ्वी का ताप बढ़ता जा रहा है। इन गैसों को **हरित गृह गैस** (ग्रीन हाउस गैस) के नाम से जाना जाता है तथा इनके प्रभाव को **हरित गृह प्रभाव** (ग्रीन हाउस इफ़ैक्ट) कहते हैं। हरित गृह के कारण पृथ्वी के तापमान का बढ़ना **'भूमण्डलीय तापन'** (ग्लोबल वॉर्मिंग) कहलाता है।

पृथ्वी पर उपस्थित हरे पेड़-पौधे इस कार्बन डाइऑक्साइड गैस को अवशोषित करके भोजन बनाते हैं तथा हमें ऑक्सीजन गैस प्रदान करते हैं। जिसके द्वारा हम सांस लेते हैं। ये पेड़-पौधे पृथ्वी पर तापमान को नियंत्रित करते हैं परन्तु हम लगातार पेड़-पौधों को काटकर इस संतुलन को बिगाड़ रहे हैं। लोग सम्पन्न एवं सुखी जीवन व्यतीत करने की होड़ में लगातार वाहनों तथा विभिन्न यंत्रों जैसे— रेडियो, टेलीविजन, फ्रिज आदि का प्रयोग कर रहे हैं जो कई तरह के प्रदूषण उत्पन्न करते हैं।

जनसंख्या वृद्धि का ऐतिहासिक इमारतों पर प्रभाव

जनसंख्या वृद्धि का प्रभाव हमारे रहन-सहन, खान-पान, रोजगार आदि पर तो पड़ ही रहा है। इसके साथ ही साथ हमारी ऐतिहासिक इमारतें भी इससे प्रभावित हो रही हैं। वाहनों व कारखानों से निकलने वाले धुएँ से वायुमण्डल प्रदूषित हो रहा है। धुएँ में उपस्थित सल्फर व नाइट्रोजन के ऑक्साइड वर्षा के जल के साथ मिलकर सल्फ्यूरिक अम्ल तथा नाइट्रिक अम्ल का निर्माण करते हैं यह अम्ल वर्षा के जल के साथ इमारतों पर गिरता है तथा उनका क्षरण करता है।



ताजमहल

इसे भी जानें

मथुरा रिफाइनरी तेल शोधक कारखाने से उत्सर्जित सल्फर डाइऑक्साइड गैस के कारण ताज महल पर गम्भीर खतरा मंडरा रहा है। आगरा स्थित विभिन्न उद्योगों जैसे— फाउण्डरी और जनरेटर सेटों से निकलने वाले धुएँ में सल्फर डाइऑक्साइड गैस होती है जिससे ताज महल की सुंदरता को खतरा है।

ताजमहल को प्रदूषण से बचाने के लिए सुप्रीम कोर्ट ने भी समय-समय पर दिशा निर्देश दिया है जैसे— ताजमहल के आसपास स्थित कारखानों को शहर से दूर स्थापित करना। इसके आसपास बहुमंजिला इमारतों के निर्माण पर रोक लगाना आदि।

जनसंख्या नियंत्रण : आवश्यकता एवं महत्व

बढ़ती जनसंख्या का दबाव हमारी सुविधाओं जैसे आवास, खेत, खाद्य पदार्थ व रोजगार पर पड़ता है। देश में उपलब्ध सुविधाओं एवं जनसंख्या का अनुपात समान बना रहे इसके लिए जनसंख्या को नियंत्रित रखना आवश्यक है। यदि जनसंख्या को नियंत्रित कर लिया जाए तो प्रदूषण, रोजगार व रहन-सहन जैसे क्षेत्रों में उत्पन्न समस्याओं को कम किया जा सकता है।

जनसंख्या को नियंत्रित करने के लिए निम्नलिखित प्रयास किए जा रहे हैं—

व्यक्तिगत प्रयास— मानव जीवन की समस्त प्रसन्नता उसके परिवार में निहित होती है। बढ़ती जनसंख्या परिवार के सुख के लिए अभिशाप बन जाती है। लोगों के रहन-सहन, खान-पान, शिक्षा आदि पर विपरीत प्रभाव पड़ता है। इसलिए कहा जाता है 'छोटा परिवार, सुखी परिवार'। देश की बढ़ती जनसंख्या को नियंत्रित करने के लिए व्यक्तिगत प्रयास करना भी आवश्यक है। जैसे— छोटे परिवार को आदर्श के रूप में स्वीकार करना व परिवार नियोजन के कार्यक्रमों को अपनाना आदि।

सामुदायिक व सरकारी प्रयास - जनसंख्या वृद्धि को नियंत्रित करने के लिए सामुदायिक व सरकारी स्तर पर भी निम्नलिखित प्रयास किए जा रहे हैं—

- शिक्षा का व्यापक स्तर पर प्रचार-प्रसार करना।
- परिवार नियोजन के कार्यक्रमों को संचालित करना तथा इसके प्रति जागरूक करना।
- बाल विवाह पर कानूनी रोक लगाना।
- स्वास्थ्य सेवाओं और मनोरंजन के साधनों में वृद्धि करना।
- दूरसंचार के माध्यमों से लोगों को जागृत करना।
- सामुदायिक स्तर पर चित्रकला, नुक्कड़ नाटक, संगोष्ठी व निबंध आदि के माध्यम से लोगों को जागरूक करना।

इन्हें भी जानें -

- विश्व जनसंख्या दिवस (World Population Day) 11 जुलाई को मनाया जाता है।
- जनसंख्या की दृष्टि से संसार के आधे से अधिक लोग एशिया में रहते हैं।
- आस्ट्रेलिया की जनसंख्या जितनी है उतनी भारत में प्रति वर्ष बढ़ती है।

अभ्यास

1. जनसंख्या वृद्धि से क्या तात्पर्य है ? इसका पर्यावरण पर क्या प्रभाव पड़ता है ?
2. जनसंख्या वृद्धि पर माल्थस के विचार क्या हैं ? समझाइए।
3. हमारी मूलभूत आवश्यकताएँ क्या हैं ? जनसंख्या वृद्धि का उन पर क्या प्रभाव पड़ता है ?
4. जनसंख्या बढ़ने पर ऐतिहासिक इमारतें कैसे प्रभावित होती हैं ? लिखिए।
5. अधिक जनसंख्या होने पर यातायात की सुविधाएँ किस प्रकार प्रभावित होती हैं ?
6. रिक्त स्थानों की पूर्ति करें-
 - (क) जनसंख्या में वृद्धि..... क्रम से होती है।
 - (ख) खाद्यान्न में वृद्धि..... क्रम से होती है।
 - (ग) जनसंख्या बढ़ने से में कमी होने लगती है।
 - (घ) जनसंख्या वृद्धि से हमारा..... प्रभावित होता है।



प्रोजेक्ट वर्क

हमारे पर्यावरण पर जनसंख्या वृद्धि के प्रभाव से सम्बन्धित समाचार, लेख, कहानियाँ, कविताएँ, चित्र, कार्टून आदि समाचार पत्रों एवं विभिन्न पत्रिकाओं में निकलते रहते हैं। आप उन्हें अपनी कॉपी के बायीं तरफ काटकर चिपकाइए और उससे सम्बन्धित अपने विचार दायीं तरफ लिखिए।